International Journal of Applied Research 2016; 2(1): 411-417

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2016; 2(1): 411-417
www.allresearchjournal.com
Received: 07-11-2015
Accepted: 08-12-2015

जयन्त कुमार बोरो
अस्सिटेन्ट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, कोकराझार गवर्मेन्ट कॉलेज, कोकराझार, असम

Correspo ndence
जयन्त कुमार बोरो
अस्सिटेन्ट प्रोफेसरए हिन्दी विभागए कोकराझार गवर्मेन्ट कॉलेजए कोकराझारए असम

मामोनि रइसम गोस्वामी के उपन्यास में अभिव्यक्त नारी चेतना

जयन्त कुमार बोरो

शोध आलेख सार:
मामोनि रइसम गोस्वामी असमीया साहित्य की एक प्रतिभा सम्पन्न विदुषी महिला लेखिका है। गोस्वामी जी ने अपनी रचनाओं में नारी की विविध समस्याओं को अंकित करने का प्रयास किया हैं। नारी समाज की एक महत्वपूर्ण ईकाई है जिसके अभाव में एक स्वच्छ समाज की कल्पना भी नहीं की जा सकती। नारी की विचारों को लेखिका ने नारावादी विचारक के रुप में अभिव्यक्त किया है। प्रकृति और पुरुष का परस्पर स्पष्ट सम्बन्ध मानवीयाता की गरिमा तक पहुँचा सकता हैं। एक नारी आजीवन अपने परिवार के निर्माण में विविध प्रकार तपस्या, त्याग आदि करती रहती है, लेकिन पुरुषवादी मानस्किता नारी के विचार और कर्म को हमेशा से उसके भाग्य का फल घोषित करने का प्रयास करता रहा। लेकिन अब समय बदल चुका है, नारी को समान अधिकार देने की बारी आ चुका है। गोस्वामी जी के उपन्यास के सभी नारी पात्र अपने अधिकारों के प्रति सचेत है तथा दबी-कुचँली भारतीय नारी को भी सम्बल बनने की प्रेरणा लेखिका ने अपने रचनाओं के माध्यम से देने का प्रयास किया हैं।

मूल शब्दः नारीवादी, परस्पर, परिवार, विचार आदि।

प्रस्तावना:
असमीया साहित्य की महिला लेखिकाओं में गोस्वामी जी का नाम शीर्ष स्थान पर रखा जाता है। ज्ञानपीठ विजयी लेखिका ने अपनी रचनाओं में अधिकतर समाज की विसंगतियों को अभिव्यक्त करने का प्रयास किया है। नारी की भी अपनी स्वतन्त्र सत्ता है, उसका भी अपना स्वाभिमान है, उसकी भी अपनी इच्छायें हैं, उसे भी समाज में पुरुष के समान अधिकार मिलना चाहिए। इन्हीं बातों को लेखिका ने अपनी रचनाओं वर्णित किया है। उपन्यासकार ने अपनी रचनाओं में जीवन के कटु सत्यों को उजागर किया है। एक साहित्यकार होने के नाते गोस्वामी जी ने स्वयं को सामाजिक दायत्वों को पूरा निभाया है। भारतीय और विश्व साहित्य जगत में लेखिका ने असमीया साहित्य को एक अलग पहँचान देने का प्रयास किया हैं।

उद्देश्य:
मामोनि रइसम गोस्वामी जी ने स्त्री अस्मिता की लड़ाई को किसी आन्दोलन के माध्यम से नहीं अपितु अपनी रचनाओं से परिचित करवाया हैं। भारतीय संस्कृति में नारी का जीवन जवलन्त समस्याओं को ले कर खड़ा हैं। नारी आज भी न्याय के लिए अपने हक की लड़ाई लड़ रही है। गोस्वामी जी ने पुरुष सत्ता के विरोध में अपनी स्वकल्पित उपन्यासों के पात्रों को इसके लिए तैयार किया है। अपने चरित्रों में कहीं न कहीं लेखिका ने अपने को प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। नारी की विडम्बना यहीं है कि उसे किसी पर आश्रित रहना पड़ता है। लेकिन लेखिका ने बोल्डनेस के द्वारा लोगो तक एक नारी की विचारधाराओं को पहुचाया है कि पति के मृत्यु के पश्चात् किसी नारी जीवन क्रम समाप्त नहीं हो जाता। नारी का विधवा जीवन किसी का मौहताज नहीं है उसे भी अधिकार है खुल कर जिने का। नारी को नारी के नज़रिये से देखना ही प्रस्तुत आलेख का उद्देश्य है।

शोधविधि:
प्रस्तुत लेख की विषय वस्तु के अध्ययन के लिए विश्लेषणात्मक पद्धति को अपनाया गया है तथा यह विषय समीक्षात्मकता पद्धति की भी मांग रखता है।

शोध सामाग्री:
प्रस्तुत आलेख की शोध सामाग्री विविध प्रकार के लेखों और साहित्य के सर्वेक्षण के आधार पर प्राप्त किया गया गया है। गोस्वामी जी द्वारा रचित उपन्यासों (मूल भाषा में और अनुदित) को आधार ग्रन्थ के उपयोग में लाया गया हैं।

मामनि रइसम गोस्वामी की जीवन परिक्रमा (कालक्रमानुसार) और साहित्यिक परिचयः

मामनि रइसम गोस्वामी जी को असमीया साहित्य जगत में 'इन्दिरा गोस्वामी' और 'मामोनि बाइदेउ' का नाम से भी जाना जाता है। मामोनि रइसम गोस्वामी जी का जन्म 14 नवम्बर सन् 1942 ई. को गौहाटी में हुआ। आपके पिता का नाम 'उमाकान्त गोस्वामी' और माता का नाम 'अम्बिका गोस्वामी' थी। सन् 1954 ई. में गौहाटी के 'लताशिल प्राइमेरी विद्यालय' और शिलांग के 'पाइन माऊन्ट स्कूल' से प्राथमिक तथा माध्यमिक शिक्षा की प्राप्ति के पश्चात् गौहाटी के 'तारणीचरण बालिका विद्यालय' में प्रवेश किया। सन् 1957 ई. 'तारिणी चरण बालिका विद्यालय' से प्रवेशिका परीक्षा उत्तीर्ण कर, सन् 1960 ई. में 'काटन कॉलेज', गौहाटी से बी.ए उपाधि की परीक्षा उत्तीर्ण किया। गोस्वामी जी की प्रथम कहानी संकलन 'चिनाकी मरम' सन् 1962 ई. में का प्रकाशित हुई। आपने सन् 1963 ई. में 'गौहाटी विश्विद्यालय' से असमीया विषय से एम. ए की परीक्षा उत्तीर्ण की। आपका विवाह सन् 1965 ई. में दक्षिण भारतीय निवासी माधेवन रइसम आयेंगार के साथ हुआ। लेकिन सन् 1967 ई. में कश्मीर में एक गाड़ी दूर्घटना में माधेवन की करुण मृत्यु हुई। वे पेशे से अक इन्जिनीयर थे। सन् 1968 ई. में असम के ग्वालपारा सैनिक स्कूल में शिक्षिका के रुप में योगदान दिया। सन् 1969 ई. में वृन्दावन (उत्तर प्रदेश) के Institute of Oriental Fellowship के तहत उपेन्द्रनाथ लेखारु के अधीन शोध कार्य प्रारम्भ किया। सन् 1971 ई. में दिल्ली विश्वविद्यालय में आधुनिक भारतीय भाषा-साहित्य के अध्ययन विभाग में असमीया विषय की अध्यापिका के रुप में नियुक्ति हुई। आपके प्रथम उपन्यास 'चेनावर स्रोत' का प्रकाशन सन् 1972 ई. में हुआ। 'माधव कन्दलि के असमीया रामायण और तुलसीदस के रामचरितमानस का तुलनात्मक अध्ययन' विषय में आपको सन् 1973 ई.पी.एच.डी (PH.D) की उपाधि प्रादान की गई। लम्बी बीमारी के बाद सन् 2012 ई. में गौहाटी में आपका देहावसान हुआ तथा इस घटना से भारतीय साहित्य जगत में शोक की लहर फैल गयी।

पुरुस्कार:

गोस्वामी जी को समय समय पर विविध प्रकार के संस्थानों के द्वारा पुरस्कार भी प्रदान किये गये हैं-

सन् 1982 ई.-'मामरे धरा तरोवाल' और 'दुखन उपन्यास' नाम से तीन उपन्यासो के संकलन के लिए 'साहित्य आकादेमी' पुरस्कार प्रदान किया गया।

सन् 1988 ई.-'दाताल हातीर ऊये खोवा हाउदा' उपन्यास के लिए 'असम साहित्य सभा' का पुरस्कार दिया गया। आत्मजीवनी 'आधालेखा दस्तावेज' का भी इसी वर्ष प्रकाशन।

सन् 1989 ई.-"संस्कार उदयभानुर चरित्र इत्यादि" नाम से तीन उपन्यासों के संकलन के लिए 'भारत निर्माण' पुरस्कार प्राप्त।

सन् 1992 ई.- इन्दोनेशिया में आयोजित नवम् अन्तर्जातीय रामायण सम्मेलन में योगदान तथा उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान की और से 'सौहार्द्थ पुरस्कार' प्रदान।

सन् 1999 ई.- अमेरिका के लफरिडा विश्वविद्यालय के द्वारा आयोजित 'तुलसीदास और उनके साहित्य कर्म' के सम्मेलन में 'अन्तर्जातीय तुलसी पुरस्कार प्रदान'।

सन् 2001 ई.- भारत के सर्वोच्च साहित्यिक पुरस्कार 'ज्ञानपीठ' प्रदान।

सन् 2002 ई.- भारत सरकार के द्वारा 'पद्मश्री' का सम्मान। पश्चिम बंगाल के 'रबीन्द्र भारती विश्वविद्यालय' के द्वारा डी. लिट् की मानद् उपाधि। असम के 'आहोम सभा' द्वारा 'जयमती' पुरस्कार प्रदान।

सन् 2006 ई.-कोरिया के 'International Federation for World Peace' के द्वारा 'Ambassador of Peace' अर्थात् 'शांति राष्ट्रदूत पुरस्कार' की घोषणा।

सम्मान:

सन् 1974 ई.- दिल्ली के मानस चतुर्वेदी समिति के द्वारा 'माधव कन्दलि के असमीया रामायण और तुलसीदस के रामचरितमानस का तुलनात्मक अध्ययन' के लिए सम्मान।

सन् 2008 ई.- कोलकाता के 'ऐशियाटिक सोसाइटी' के द्वारा 'ईश्वर चन्द्र विद्यासागर स्वर्ण पदक' से सम्मानित।

सन् 2009 ई.- 'दिल्ली विश्वविद्यालय' के द्वारा 'प्रोफेसर आँफ एमेरिटाछ' सम्मान प्रदान किया गया।

सन् 2011 ई.- असम सरकार के द्वारा सर्वोच्च पुरस्कार 'असम रत्न' से सम्मानित।

सन् 2011 ई.– कोलकाता से 'वटवृक्ष सम्मान' से सम्मानित किया गया।

यात्रा:

सन् 1976 ई.- 'जापान' और 'दक्षिण पूर्व एशिया' का भ्रमण।

सन् 1998 ई.- रामायणी साहित्य से सम्बन्धित संगोष्ठी में भाग लेने हेतु स्पेन का यात्रा।

प्रकाशित साहित्यिक ग्रंथ:

कहानीः 'चिनाकी मरम' (1962), 'कईना' (1966), 'हृदय एक नदीर नाम' (1960), 'मामनि रइसमर निर्वाचित गल्प' (1998), 'मामनि रइसमर प्रिय गल्प' (1998) आदि।

उपन्यासः 'चेनावर स्रोत' (1972), 'नीलकंठी ब्रज' (1976), 'अहिरण' (1980), 'मामरे धरा तरोवाल' (1980), 'दाताल हातीर उये खोवा हाउदा' (1988), 'संस्कार उदयभानुर चरित्र', 'इत्यादि' (1991), 'तेज आरु धुलिरे धूसुरित पृष्ठ' (1994), 'मामोनि रइसम गोस्वामीर उपन्यास समग्र' (1998), 'दाशरथीर खोज' (1999), 'छिन्नमस्तार मानुहटो' (2001), आदि।

आत्मजीवनी परक ग्रंथः 'आधालेखा दस्तावेज' (1988)।

जीवनीः 'महीयसी कमला' (1995)।

अनुवादः 'प्रेमचन्दर चुटि गल्प' (1975), 'आधाघण्टा समय' (1978), 'जातक कथा' (1996), 'कलम' (1996), 'आहिक' (2000) आदि।

अंग्रेजी ग्रंथः 'Ramayana from Ganga to Brahmaputra' (1996)।

सम्पादनाः 'एरि एहा दिनबोर मलया खाऊन्डर सेते' (1993), 'Indian Folklore'।

गोस्वामी जी के रचनाओं का अन्य भाषा में अनुवाद:

सन् 1986 ई.- 'नीलकंठी ब्रज' उपन्यास का अंग्रेजी अनुवाद 'The Shadow of the Dark and the Sin' के नाम से प्रकाशन।

सन् 1990 ई.-आत्मजीवनी 'आधालेखा दस्तावेज' का अंग्रेजी में "An unfinished Autobiography" के नाम से अनुवाद।

सन् 1993 ई.-'दाताल हातीर ऊये खोवा हाउदा' उपन्यास का अंग्रेजी में 'Saga of South Kamrup' के नाम से अनुवाद।

सन् 1997 ई.- 'दाताल हातीर ऊये खोवा हाउदा' उपन्यास का हिन्दी में 'दक्षिणी कामरुप की गाथा' नाम से अनुवाद एवं प्रकाशन।

नारीवादी विचारधारा:

नारीवादी विचारधारा आधुनिक चिन्तनधारा का प्रमुख लक्षण है। नारी प्रायः सभी देशों में घरेलु काम-काज, सन्तान को जन्म देना और लालन करने वाली, परिवार के सभी लोगो के देखभाल आदि काम में अकसर सीमित कर दिया जाता है। जिस कारण से नारी को किसी प्रकार की समाजिक मर्यादा पुरुषों के बराबर नहीं मिलता। समाज में नारी-पुरुष की जो विषमतायें विद्यमान हैं, इसी कारण ऐसी विचारधारायें विकसित हुई है कि नारी पुरुषों की तुलना में हीन है। नारीवादी विचारधारा के वाले नारी और पुरुषों के मध्य जो विषमता है उसे सहज रुप से स्वीकार नहीं करते है। नारी को भी पुरुषों के समान अधिकार मिलना चाहिए जैसी विचारो का समर्थन करते आ रहे है। समाज में नारी और पुरुष दोनों ही एक ही सिक्के के दो पहलु है। दोनों के मध्य एक परस्पर सुन्दर सम्बन्ध के अभाव में, एक अच्छे परिवार और समाज की कल्पना नहीं की जा सकती। एक अच्छे परिवार और समाज निर्माण में नारी की महत्वपूर्ण भूमिका रहती है। अंग्रेजी में 'Feminism' शब्द ही नारीवाद के अर्थ में प्रचलित हुआ। 'ओक्सफोर्ड शब्द कोश' के अनुसार अंग्रेजी 'फेमिनिज्म्' शब्द सबसे पहले सन् 1895 ई. में हुआ था। 'फेमिनिज्म्' ग्रंथ के लेखक 'जन चार्भेर' के अनुसार नारी के प्रति भी पुरुषों के समान विचार और भावना ही नारीवाद है।

मामोनि रइसम गोस्वामी के उपन्यास में अभिव्यक्त नारी चेतना:

वास्तवित जीवन के विविध दृश्यों के अनुभवों के द्वारा ही रचनाओं की सृष्टि होती है। रचनाकार की नीजी अनुभुतियों और सम्वेदनाओं की धरातल जो रचनाओं में अभिव्यक्त होता है वे सारे उनके अपनी नीजी जीवन का ही एक रंग होता है। उनके साहित्यिक कृतियों में अभिव्यक्त विविध प्रकार के प्रश्न जो हमें देना चाहते हैं वे भी सारे हमारे वास्तविक जीवन धरातल से ही जुड़ा हुआ होता है। मामोनि रइसम गोस्वामी वास्तविक जीवन के धरातल पर आधारित साहित्य निर्मित करने वाली असमीया साहित्य की लेखिका थी। असमीया लेखिका मामोनि रइसम गोस्वामी अपनी लेखनी के माध्यम से सम्पूर्ण भारत में ख्याति प्राप्त कर चुकी है। गोस्वामी जी के द्वारा रचित बहुरंगी उपन्यास जीवन के क्षणिक आनन्द-हर्ष, उद्वेलित, उत्पीड़न, दुःख-विषाद, वेदना आदि से भरी हुई है। सन् 1942 ई. में जन्मी असमीया लेखिका गोस्वामी जी कहानियों के माध्यम से साहित्य जगत में अपनी भावनाओं को प्रकाशित किया। गोस्वामी जी ने सत्तर के दशक से उपन्यास लिखना प्रारम्भ किया है। उपन्यास विधा के माध्यम से अपनी साहित्यिक प्रतिभा को इस तरह विकसित किया है कि असमीया साहित्य जगत में ही नहीं अपितु सम्पूर्ण भारतीय साहित्य में पूर्णिमा की चाँन्द की भाँति प्रकाशित हुई है। मामोनि रइसम गोस्वामी जी एक ऐसी महिला लेखिका है जिन्होने अपने जीवन के विविध रंगों के दृश्यों को देखा और सहा भी। गोस्वामी जी के 'आधा लेखा दस्तावेज और हृदयर तपस्वनी' नामक ग्रन्थों के अध्ययन से उनके जीवन में अन्तर्निहित दुःख, वेदना और यन्त्रणायें आदि परिलक्षित होती है। लेखिका का जीवन बड़ा ही विचित्र और संघर्ष मय रहा है। 'आधा लेखा दस्तावेज' उनकी आत्मजीवनी परक उपन्यास है। इस ग्रन्थ के प्रथम अध्याय में लेखिका ने स्वयं लिखा है कि –

> *"सइ समयत वयस बर कम आसिल। खोवा-पिन्धा चिन्ता नासिल। एनुकुवा अवस्थात मोर बयसर जिकोनों सोवालीये आनन्द दिन कटोवार कथा आसिल। मोर कोपालत किन्तु एइ आनन्द कथा नासिल। एक प्रकारर नैराश्य आरु दुःखबोधके मोर हृदयर लगत जेन घर बान्धिये लइसिल।" [1] (मूल भाषा असमीया से हिन्दी में लिप्यान्तरण)*

अर्थात् लेखिका कहती है कि उस समय आयु कम थी। खाने-पीने की चिन्ता नहीं थी। ऐसी अवस्था में मेरी उम्र की लड़कियाँ आनन्द के बिताने की बात सोचती है। किन्तु मेरे भाग्य में यह आनन्द की बात नहीं थी। एक प्रकार से नैराश्य और दुःख बोध ने ही मेरे हृदय के साथ घर निर्माण कर लिया था।

लेखिका ने अपने जीवन में प्राप्त दुःख और वेदना को अपनी संगी बनाकर उपन्यासों के माध्यम से अभिव्यक्त करने का प्रायास किया है। समाज जिन्हे एक समय दूर्भाग्य के पथ की और बढ़ने के लिए रोकती थी वहीं समाज एक समय उन्हें अवहेलना की दृष्टि से देखने लगा था। लेकिन वहीं समाज आज उन्हें साहित्य के उच्च स्थान पर विराजमान करता है। जीवन से अर्जित कटु अनुभवों को गोस्वामी जी को रचनाये निर्माण करने के लिए प्रेरित किया और जिसके फलस्वरुप उन्होंने कई कालजयी उपन्यासों का प्रणयन कर साहित्य समाज को उपहार स्वरुप प्रदान किया। आज इन्दिरा गोस्वामी भारतीय कथा साहित्य जगत की विस्मरणीय प्रतिभाशाली लेखिका बनकर उभरी है। गोस्वामी जी केवल भारतीय से ही नहीं बल्कि ब्रिटेन, जापान, इदोनेशिया, थाइलेन्ड, नेपाल, बेलजियाम के साथ दक्षिण पूर्व एशिया के बहुत से देशों का भ्रमण कर ज्ञान और अनुभव प्राप्त किया। उन अर्जित अनुभवों के फलस्वरुप वृहद रामायणी साहित्य की गवेषणा कर सकी। डॉ. मामोनि रइसम गोस्वामी जी ने कई कालजयी उपन्यासों की रचनायें की है। उनकी रचनाओं में एक गहरी मानवताबोध उभर कर पाठकों के सामने आती है।

'चेनावर सोत '(सन् 1972 ई.) की प्रथम उपन्यास है। इसके प्रश्चात् क्रम से उपन्यासों की रचनायें की है। 'नीलकण्ठी ब्रज' (सन् 1976 ई.), 'अहिरण' (सन् 1980 ई.), 'मामरे धरा तरोवाल' (सन् 1980 ई.), 'दाताल हातीर उये खोवा हाउदा' (सन् 1988 ई.), 'आधा लेखा दस्तावेज' (सन् 1989 ई.), 'संस्कार उदयभानीर चरित्र' (सन् 1989 ई.), 'जखमी यात्री' (सन् 1990 ई.), 'तेज आरु धुलिरे धूसरित पृष्ठ' (सन् 1994 ई.), 'छिन्न मस्तार मानुहटों' (सन् 2001 ई.) आदि उनकी औपन्यासिक कृतियाँ है। 'Ramayana from Ganga to Brahmaputtra' (सन् 1999 ई.) उनके द्वारा की शोध ग्रंथ का नाम है। उपर्युक्त सभी रचनाओं के प्रकाशन के पश्चात् वे असमीया समाज और साहित्यजगत में एक सुप्रतिष्ठित लेखिका के रुप में उभरने लगती है। उनके द्वारा लिखित लगभग सभी उपन्यास हिन्दी और अंग्रेजी भाषा में अनुदित हो चुकी है। गोस्वामी जी की साहित्यिक कर्म के विषय में असमीया साहित्य के विद्वान डॉ. हीरेन गोहाइ ने कहाँ है कि –

> *"Mamoni Raisom Goswami is the most extraordinary thing have to have happened to Assamese Literature in recent years. She has sprung upon her readers a whole new world experience of feeling, perceptions, thoughts, characters, types and situations had been writing quality for years and had attained maturity without a big solace in the media. But when the products of her mature years searched the sending public, they were astounded by her phenomenal sensitiveness and the range and depth of her imaginative vision." [2]*

उनकी प्रथम उपन्यास 'चेनावर सोत' (चेनाव की धारा) में शोषित श्रमिक जीवन की श्रम, दुर्दशा, दुःख-विषाद, निराशा और अन्तर्नाद की हृदय विदारक की करुण गाथा है। यह उपन्यास श्रमिक जीवन की घटनाओं पर आधारित है। गोस्वामी जी लिखती है कि –

> *"1966 सनते एइ उपन्यास लिखा हइसिल। कश्मीरर चेनाव नदीर उपरत बन्धा दलंग एखनर श्रमिकसकलक केन्द्र करि एइ उपन्याल रचना करा हइसिल। एये मोर प्रथम उपन्यास। बयख कम आसिल बाबे अभिज्ञता किसु कम आसिल, किन्तु निज चकुरे देखा श्रमिकर जीवनर एया एक*

दलिल आसिल। किसु रहणहे मात्र दिया हइसे।" [3] (मूल भाषा असमीया से हिन्दी में लिप्यान्तरण)

अर्थात् सन् 1966 में ही इस उपन्यास को लिखा गया था। कश्मीर के चेनाव नदी के उपर एक पुल निर्माण में लगे हुये श्रमिकों को केन्द्र कर इस उपन्यास की रचना किया गया था। यहीं मेंरी प्रथम उपन्यास है। उम्र मेरी कम थी, जिस कारण मेरी अनुभव भी कुछ कम थी। लेकिन अपनी आँखों से देखी हुई श्रमिक जीवन की यह एक दलील है। इसमें कुछ रंग चढाया गया है।

इस उपन्यास के लिखने के पश्चात् उन्होनें इस विधा में अपनी लेखनी को आगे बढ़ाया। प्रस्तुत आलेख में सिर्फ उनके द्वारा अस्सी के दशक और उसके बाद लिखे गये उपन्यास को ले रहा हूँ। डॉ. गोस्वामी के साहित्यिक जीवन का कीर्तिस्तम्भ उनकी उपन्यास 'मामरे धरा तरोवाल' (जंग लगी तलवार) को माना जाता है। इसी उपन्यास के कारण उन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया है। मामनि रइसम गोस्वामी के एक साक्षात्कार में कहाँ था कि-

"मोर मनत सइखोन आदर्श समाज जोत मानुहे मानुह मानुह बुलि भाबिब जाने।" [4] (मूल भाषा असमीया से हिन्दी में लिप्यान्तरण)

अर्थात् मेरे मन में वहीं आदर्श समाज है जहाँ मनुष्यों को मुनष्यों ही सोचना जानता हो। सन् 1976 ई. में रचित गोस्वामी जी की उपन्यास नीलकंठी बज्र में प्रकाशित हुआ। इस उपन्यास की पृष्ठभूमि ब्रजधाम है। इस उपन्यास के सन्दर्भ में उन्होंने स्वयं कहाँ है कि –

"सुदीर्घकाल बृन्दाबनत बास करि थगा अभिज्ञतारे उपन्यासखन रचना करा हैछे। बृन्दाबनत एतियाओ बास करि थगा दुइ एजन लोकर वास्तव जीवनर दुइ एटा टुकुराक अवलम्बन रुपे लै उपन्यासखनर कोनो चरित्र गढ़ि तोला हैछे जदिओ सरहभाग चरित्रइ कल्पनार उपरत प्रतिष्ठित।" [5] (मूल भाषा असमीया से हिन्दी में लिप्यान्तरण)

अर्थात् एक लम्बा अरसा वृन्दावन में रहने के अनुभव के आधार पर इस उपन्यास की रचना की गई है। वृन्दावन में अब भी रह रहे दो-एक लोगो के वास्तविक जीवन के दो-एक अंश को आलम्बन के रुप में लेकर इस उपन्यास की रचना तो की गई है लेकिन इस उपन्यास के अधिकतर चरित्र कल्पनिक ही है।

'नीलकंठी ब्रज' उपन्यास में उपन्यासकार ने मूल चरित्र सौदामिनी के माध्यम से वृन्दावन में रह रहे विधवा स्त्रियों की कारुणा पूर्ण चित्रण किया है। सोदामिनी विवाह के एक वर्ष के पश्चात् ही उसके पति का निधन हो जाता है। वह शिक्षित, सुन्दरी और एक साहसी नारी थी। समाज की धार्मिक, नीति के अनुसार उसके माता-पिता यही कामना करते थे कि सौदामिनी एक विधवा की व्रत चारणि की भाँति जीवन यापन करे। लेकिन सौदामिनी को इसाई युवक के साथ प्रेम हो जाता है। इसीलिए सौदामिनी के माता-पिता उसके मानसिक परिवर्तन के लिए हिन्दु धर्म के पवित्र स्थान ब्रजधाम में ले जाते है। लेकिन इस पवित्र धाम में धर्म के नाम पर अधर्म, भ्रष्टाचार तथा विधवा राधेश्यामियों के नर्क की यान्त्रणा भरी जीवन की दशा को देखकर सौदामिनी का मन जल उठता है। सौदामिनी ब्रजधाम में शांति की प्राप्ति के उद्देश्य से आती है लेकिन उसे अशांति ही मिलती है। देखने में कृष्ण भक्त राधेश्यामी स्त्रियाँ असल में दरिद्रता की प्रति मूर्ति ही है। इस उपन्यास में लेखिका ने हमारे भारतीय समाज में विधवा नारी विविध स्थितियों को कारुणिक रुप से प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। हमारे समाज की यह विडम्बना है कि पति की मृत्यु के बाद हम नारी को बुरी नजर से देखते है। भूल जाते है कि वह भी हमारे समाज और संस्कृति का एक अभिन्न अंग है।

सन् 1980 ई. में रचित गोस्वामी जी की उपन्यास 'दाताल हाथीर उये खोवा हाउदा' जिसका हिन्दी अनुवाद 'दक्षिणी कामरुप का गाथा' के नाम से किया गया है। इस उपन्यास में नारी की भावनाओं का नारी के चरित्र के द्वारा ही वर्णित करने का प्रयास किया गया है। इस उपन्यास की पृष्ठभूमि के रुप में असम के कामरुप जिले के दक्षिणी भाग में स्थित एक वैष्णव मठ 'आमरङा सत्र' को केन्द्र में रखा गया। इस उपन्यास में चित्रित विविध चरित्रों के माध्य्म से उस मठ के परिवेश की व्यवस्था और समाज जीवन के समग्र स्वरुप को वर्णित किया है। आमरङा सत्र (वैष्णव मठ) के भावी सत्राधिकार (मठाधीश) इन्द्रनाथ का व्यक्तित्व एक सेम्वदनशील प्रवृति का है। वे मानवतावादी आदर्श के प्रति श्रद्धाशील, प्रगतिशील चेतना से युक्त एक सहानुभूतिशील व्यक्ति है। सामाजिक विसंगतियों के प्रति इन्द्रनाथ ने परम्परागत नीति-नियमों का उलंघन किया था। उसकी बुआ दूर्गा, बहन गिरिबाला और चाची (सत्र का छोटी गोसईनी) तीनों ही विधवा होती है। इन तीन नारी चरित्रों की वैध्व्य यंत्रणा, जीवन निर्वाह की प्रणाली को लेकर इन्द्रनाथ बहुत दुखी हुआ करता था। इन्द्रनाथ एक ब्राह्मण कन्या से प्रेम करता था और उससे विवाह करने की प्रखर इच्छा था। किन्तु इसी समय वैष्णव मठ के सत्रीय गोसाइयों के जमीनो को रायत (a government tenant) कबजा करने आते है। इन्द्रनाथ को जमीन-जायदात के प्रति कोई लोभ न था, किन्तु अपने पिता के अपमानित होने के कारण इन्द्रनाथ हाथी पर हाउदा (a saddle on an elephant, an enclosed on an elephant) पर बैठ कर खेतो में धानों की कटाई को देखने के लिए जाते है। रायतों को जमीन के कर देने की घोषणा करने के लिए जाते समय ही उनके पिता को मृत्यु का सम्मुखिन होना पड़ता है। उपन्यास की मूल कथावस्तु इतनी ही है लेकिन उपन्यास में स्वाधीनता आन्दोलन, उच्च वर्ण हिन्दु नारी की यातनायें, प्रेम, दैहिक आकर्षण आदि विभिन्न घटनाओं को सम्मिलित किया गया है। लेकिन प्रस्तुत आलेख में किस प्रकार इस उपन्यास में नारी पात्रों में नारी चेतना अभिव्यक्त हुआ उसका अवलोकल करना है। लेखिका ने नारी चेतना को बलपूर्वक प्रतिष्ठा करने का प्रयास किया है। 'दाताल हाथीर उये खोवा हाउदा' उपन्यास की सबसे महत्वपूर्ण नारी पात्र गिरिबाला है। उपन्यासकार ने गिरिबाला के माध्यम से नारी केन्द्रित वास्तविकता को अति संवेदनशील रुप में प्रकाशित करने का प्रयास किया है। गिरिबाला को पुरुषप्रधान समाज व्यवस्था में कम उम्र में ही वैधव्यक जीवन को गले लगा लेना पड़ता है। समाज उसके उपर धर्म के नाम पर परम्परा, नीति के नाम पर मानवताविरोधी मनोभावों जैसे अवर्णनीय कार्य किया। उसकी का वर्णन लेखिका ने पुरजोर से प्रकाशित करने का प्रयास किया है। गिरिबाला वैष्णव सत्राधिकार गोसाइ की बेटी है। सत्रधिकार गोसाइ को समाज में सम्मानीय व्यक्ति माना जाता था। उनकी बेटी गिरिबाल एक बाल विधवा जीवन जी रही होती है वह अंधविश्वासी संस्कार के घर रह नहीं पाने के कारण अपनी माँ के घर पर जाकर आश्रय लेती है। उसकी विवाह सत्र के एक बुढ़े वैष्णव लाटु के साथ कर दिया जाता है, किन्तु कुछ दिनों के पश्चात् ही वह विधवा हो जाती है। परम्पराओं के अनुसार उच्चवर्ण के हिन्दुओं की विधवा नारी को चाल-चलन, रहन-सबन, बातचीत, खान-पान, पहनना-ओढ़ना आदि सभी क्षेत्रों में कठोर रुप से विशेष ध्यान रखना पड़ता है। विधवा होने की यहीं अभिप्राय था जैसेकि एकांकी जीवन व्यतित करना, असहाय, व्रतधारिणी आदि। गिरिबाला को देखकर गाँव की स्त्री यही कहा करती थी कि-

"नुचुवि ! नुचुवि ! एइमात्र बारी होवा तिरि, ऐ शिरत सेन्दुर पिन्धा तिरिहँत! नुचुवि ! नुचुवि !" [6] (मूल भाषा असमीया से हिन्दी में लिप्यान्तरण)

अर्थात् छुवो मत! छुवो मत! यह अभी अभी विधवा हुई औरत है! ऐ मांग में सिन्दुर लगाने वाली औरते ! छुवो मत ! छुवो मत !

यह समाज इतना निष्ठुर है जो वैधव्य जीवन को ओर अधिक निष्ठुर बनाने के तत्पर में रहता है। गिरिबाला का विधवा होने के कारण उसे सभी स्त्रियाँ छोड़कर चली जाती है। गाँव का एक गोसाइ स्त्री गिरिबाला की माँ से कहती है कि –

> "किछु दिन राखि तुमि गिरि उल्टे पठियावि, स्वामी-भिठाइ स्वर्ग। स्वामी-भिठाइ हाड़ पेलोवा तिरिये स्वर्ग पाव पारे। स्वामी-भिठा एरि अहा तिरी आरु लेंटो हइ बाटे घूरि फुरा तिरीर माजत कोनो फाराक नाइ। कापोर पिन्धिउ लेंटो होब लोगा तिरीर यन्त्रणा बर भयंकर कथा।" [7] (मूल भाषा असमीया से हिन्दी में लिप्यान्तरण)

अर्थात् कुछ दिन रखकर तुम गिरि को भेज देना, स्वामी का घर ही स्वर्ग है। स्वामी के घर पर मरने वाली स्त्री को ही स्वर्ग मिल सकता है। स्वामी का घर छोड़ कर आने वाली स्त्री और नंगा होकर इधर-उधर घुमने फिरने वाली स्त्री में कोई फर्क नहीं है। कपड़े पहने हुये भी नंगी होने वाली स्त्री की यन्त्रणा बड़ी भयंकर बात है।

माँ के घर पर लोट आने के एक दिन पश्चात् ही आस पास के सभी लोगो घर में बुलाकर भोज का आयोजन करते है, भोज बकड़ा [8] का मांस विशेष रुप से परोसा जाता है। लेकिन गिरिबाला को विधवा होने के कारण एक कोठी में बन्द कर रख दिया जाता है, कारण व्रतधारिणी विधवा मान कर उसे भोज से दूर रखा जाता है। लेकिन वह पकाये हुये मांस के गंध को पाकर खाने की प्रबल इच्छा से रह नहीं पाती है। उसी कोठी में किसी के द्वारा छुपाये हुये मांस के एक-दो टुकड़े को वह मुह में डाल लेती है। यह बात सभी को मालुम हो जाता है और उसके बदले उसे प्रताड़ना, कटु आलोचना, का भागी बनना पड़ता है। गिरिबाला असहाय होकर भी निडर रहती है। आलोच्य उपन्यास में एक बाल विधवा की लांछना की स्पष्ट छवि को लेखिका ने अंकित करने का प्रयास किया है। उसे देखने के आये हुये गाँव की स्त्रियों की बाते निःसहाय कर देती है। स्त्रियाँ कहती है कि –

> "शुनिछो शाहुवेक हेनो बर कष्ट दिलाक, पेटर सन्तानटो बोले नष्ट होइ गइछे, हयने आइ?" [9] (मूल भाषा असमीया से हिन्दी में लिप्यान्तरण)

अर्थात् सुना है कि सास ने बहुत कष्ट पहुँचाया, सन्तान भी गर्भ में ही नष्ट हो गया है, है किया आइ? ।

एसे परिवेश में भी गिरिबाला का मन से दूर्बल नहीं होती है उसके भीतर की नारी स्वभाव जो सुप्त अवस्था में थी जाग जाती है। वह अपने जीवन के वैधव्य को स्वीकार कर कभी भी उससे हार नहीं मानती चाहती है और विद्रोही स्वाभाव सी बन जाती है। गिरिबाला कहती है कि –

> "मइ दूर्गी सरु गहेनीर दरे बाचि थाकबा नरु।" (मूल भाषा असमीया से हिन्दी में लिप्यान्तरण)

(अर्थात् में दूर्गा और छोटी गोसाइ की तरह जी कर नहीं रह सकती।) कारण इन्द्रनाथ की बुआ दूर्गा ने पिता प्रधान समाज में नतमस्तक होकर, समाज की इच्छानुसार विधवा नारी को सम्मान कर अपने जीवन में आचरण करने लगी थी। गिरिबाला को सत्राधिकार ने वैसा ही बनने के लिए बाध्य किया था पर वह मर कर भूत हो जाएगी, लेकिन दूर्गा की तरह वह अपने स्वर्गीय स्वामी के स्मरण को फुल-तुलसी चाह कर भी न दे सकी। देह और मन की क्षुधा ने उसे हमेशा व्याकुल किया है। सन्यासी मार्क् के सम्मुख उसने अपने समस्त शोक-दुःख को झकझोर दिया है। अपने को समर्थन करते हुये स्वयं अपनी करुण व्यथा को कहती है। वह विधवा जीवन के धर्म को पालन कर जी नहीं सकती। गिरिबाला कहना है कि- ससुर मुझे लिवाने कुछ लोगो के मायके भेजते है। लेकिन वहाँ जाना और शमशान जाना एक ही बात है। गिरिबाला किसी भी कीमत पर ससुराल नहीं जाना चाहती। वहाँ का जीवन उसे नर्क सा लगता है। गिरिबाला का आत्मसमर्पण का कारण एकमात्र उसकी सुप्त और दमित कामनायें है। -

> "शरीर एने आवश्यक ना? इयार इमानेइ शक्ति ना जे सब किछु उच्च होइ जाय?" [10] (मूल भाषा असमीया से हिन्दी में लिप्यान्तरण)

अर्थात् शरीर इतना आवश्यक है? इसकी इतनी शक्ति है कि सब कुछ उच्च हो जाता है?

गिरिबाला के भीतर ऐसे कई प्रश्न उत्पन्न होता रहता है। वह सोचती है कि मेरा एश्वर्य धूल की तरह अर्थहीन हो गया है। उपन्यासकार ने गिरिबाला के चरित्र के माध्यम से परम्परा के विरुद्ध जाकर साहसी और विद्रोही के रुप में अंकित किया है। कह सकते है कि गिरिबाला के द्वारा नारीवादी चेतना को प्रकाशित करने का प्रयास किया गया है। इस उपन्यास में पुरुषों का नारी देह की भोग की प्रवृत्ति को चत्रित किया गया है। लेखिका ने इस उपन्यास में एक ऐसे समाज का निर्माण किया है जिसमें निःसन्देह पुरुषप्रधान समान्तवादी समाज, जिसके सभी नियम कानुन नारी को पल प्रति पल लज्जित करती है और पुरुषों के इन्द्रिय भोग को आमंत्रित और अनुमति प्रदान करती है।

गोस्वामी जी द्वारा रचित उपन्यास 'मामरे धरा तरोवाल' (जंग लगी तरोवाल) सन् 1980 ई. में प्रकाशित हुआ। उपन्यास में भी नारी चरित्र नारायणी के माध्यम से नारी की साहसिकता की छवि को अंकित करने का प्रयास किया है। इस उपन्यास की पृष्ठभूमि उत्तर प्रदेश के रायबरोली जिले के साइ नदी पर एक पक्की नाले के निर्माण प्रतिष्ठान के अस्थायी शिविर में रह रहे श्रमिकों के दैनन्दिन जीवन के दृश्यों को लेखिका ने अंकन करने का प्रयास किया है। उपन्यास में सिर्फ नारी भावना की कहानी ही नहीं है बल्कि श्रमिकों की वंचित और शोषित की कहानी प्रस्फुतित एवं अभिव्यक्त हुआ है। परिस्थिति वश वह एक तरफ एक रुग्न पुरुष की पत्नी और दूसरी तरफ सुन्दरी का रुप धारण कर जीवन जीने के लिए बाध्य होती है। अपने पति के कारण ही उसे देह व्यवसाय करनी पड़ती है जहाँ कोई उसे संगी नहीं बनाता अपितु सभी क्षण भर के लिए ही आते है। जीवन के प्रति उसे कोई मोह नहीं रह जाता। किन्तु उसकी दमित व्यथायें एक उग्र रुप धारण कर वह साहसी बनकर उठती है। उसके भीतर दमित शोभ, घृणा और हताशा आदि प्रत्याघात कार्य में परिणत होकर चरम बिन्दु तक पहुँच जाती है। उपन्यासकार ने एक ऐसी असहाय नारी का चित्रण किया है जिसे किसी से भी कोई सहानुभूति नहीं मिलती। साई नदी पर बड़े नाले के निर्माण करने वाले एक निजी कम्पनी के श्रमिक नारायणी के जीवन को एक सहाब ने गन्ने की चुस लेता है। उसका विवाह शिबु नाम के व्यक्ति के साथ होती है, जो शारीरिक अवस्था से रुग्न था। कम्पनी में हड़ताल होने के समय में परिवार और बच्चे के लिए उसे अपना देहदान करना पड़ता है। एक साहाब का छलपूर्वक और प्रवन्चना के द्वारा उसको गर्भवती करना नारायणी के जीवन की हृदयविदारक कहानी है। उसके भीतर प्रतिवाद की ज्वाला पल प्रतिपल धधकती रहती है। लेखिका ने बड़ी ही कुशलता पूर्वक नारायणी की चरित्र को अंकित करने का प्रयास किया है। चौधरी साहाब उसे एक बार रुपये की पोठली देने के लिए आते है लेकिन उसकी क्रोध पूर्ण दृष्टि से साहाब को लौट कर आना पड़ता है। एक बार साइ नदी में स्नान करते समय नारायणी का मन जैसे विचारों की लहरे उठने लगती है। वह अपने मन में आत्महत्या जैसे विचारों को भी लाती है लेकिन वह ऐसा नहीं करती। वह अपने में जैसे एक संकल्प को पाले हुये रखती है।

> "साइ नदीत गा-धुउँते ताइर आत्माहत्यार भाव आहिल। किन्तु हठाते फेटी सापर दरे फोच फोच करि उठिले ताइर एइ चुलिटारिये। बर आलफुलकोइ

> ताइ चुलिटारि डिंगित मेरुवाइ लोले, लाहे लाहे ताइ पनीरपरा उठि आहिल।.....आजि साइ नदीर पानीरपरा उठि आहोते ताइ मने मने एटा संकल्प लोये जेन उठि आहिल।" [11] (मूल भाषा असमीया से हिन्दी में लिप्यान्तरण)

अर्थात् साइ नदी में स्नान करते समय आत्महत्या का भाव आया था। किन्तु एकाएक नाग की तरह की उसकी केशों से फु-फु कर फन उठने लगे। बड़े प्रेम से उसने केशों को गले में मोर लिया और वह धीरे धीरे से पानी से बाहर आने लगती है।.....आज साइ नदी के पानी से बाहर हुये उसने जैसे मन ही मन एक संकल्प लेकर आती है।

उपन्यासकार ने नारी भावना की वास्तविकता को धीरे धीरे करते हुए अपने कथन शैली से आगे बढ़ाती है। मनुष्य का मनुष्य के प्रति अमानवीयता का व्यवहार और यंत्रणा को प्रकाशित करने का एक सफल प्रयास किया है। लेखिका ने एक तेज धार वाली तलवार की भाँति तिख्त भाषा का प्रयोग के माध्यम से उपन्यास की कथावस्तु को मर्मस्पर्शी बनाया है। बाध्य होकर असतीत्व की ओर बढ़ने वाली नारायणी का करुणा पूर्ण चित्र आलोच्य उपन्यास में लेखिका ने ध्वनित करने का प्रयास किया है। लेखिका ने नारायणी के अन्तरद्वन्द को प्रकाशित करने विविध उपमा, प्रतीक आदि का प्रयोग किया है। मामरे धरा तरोवाल उपन्यास से कुछ पंक्तियों को उदाहरण स्वरुप लिया जा सकता है। जैसे-

> "तेल-टेङा घहि अहा सिहँतर देहर परा आजि डाव नारिकलर पानीर दरे गोन्ध भाहि आहिछे।" (मूल भाषा असमीया से हिन्दी में लिप्यान्तरण)

अर्थात् तेल आदि लगाकर आने वाले आज उनकी शरीर से नारियल की पानी की तरह वु निकलने लगा है।

> "एइ काँइटिया बाबूल गछ आरु शुकान माटिर उपरत तार दृष्टि बारे बारे बाजि रोब धरिले। नोवाखालिर माटिर हिन्दु-मुस्लमानर तेजर तरप पियाजर तरपर दरे गाप खाइछिल।" (मूल भाषा असमीया से हिन्दी में लिप्यान्तरण)

अर्थात् एक कटीली बबुल के पेड़ और सुखी मिट्टी के उपर उसकी दृष्टि बार बार रुक जाती है। नोवाखालिर के हिन्दु-मुस्लमानों के रक्त की बुन्द प्याज की छिलके की परत की तरह सटा हुआ था।

> "कोलात ताइर छमहीया केचुवाटो पाखि गुचोवा पार चराइर दरे लेटु-सेतु हइ परि आछिल।" (मूल भाषा असमीया से हिन्दी में लिप्यान्तरण)

अर्थात् उसकी गोद में छः महीने की शिशु ऐसे लग रहा था जैसे पंख हटाये हुये नंगे कबुतर की भाँति पड़ा हुआ था।

लेखिका के विविध उपमानों और प्रतीको का प्रयोग सजीव बन पड़ा है। उनके प्रयोग किये हुये उपमान, प्रतीक, व्यंजना आदि ने नारी की भावनाओं को मर्मस्पर्शी और सम्वेदनशील बना दिया है। नारायणी की मनोभावना बड़ा ही हृदय विदारक है। उपन्यास की कथावस्तु के तहत बीच बीच में नारायणी का सन्देह होना ही उसे एक नवीन संकल्प के साथ साहसी बनाती है। नारायणी की मानसिक अन्तरद्वन्द, को विद्रोही स्फुर्लिंग में रुपान्तरित किया है। वह शोषित साहाब की हत्या तो करती है लेकिन वह साहाब के रुप में समाज के एक छल-कपत वाले पुरुष जाति की हत्या करती है। यह उसके द्वारा की गई एक निर्मम प्रतिवाद थी। पुरुषप्रधान समाज की व्यवस्था पुरुषों के द्वारा ही निर्मित है, जिसका संचालन और नियन्त्रण स्वयं पुरुष के द्वारा ही होता है। नारी समाज उसी में सीमित होकर उसे ही संस्कार स्वरुप मानती आ रही है। लेकिन अब धीरे धीरे नारी चेतना जागृत होने लगी है। मामोनि रइसम गोस्वामी के उपन्यासों के चत्रित नारी पात्र विशेष रुप से वैधव्य जीवन जीने वाली नारी है। उनके उपन्यासों में अभिव्यक्त नारी चेतना, सम्वेदना आदि मर्मस्पर्शी होकर प्रस्फुटित हुआ है। उनके द्वारा निर्मित चरित्रों ने निष्ठुर परम्परागत रीति-नियमों के प्रति विद्रोह की घोषणा की है। उनके उपन्यास के गिरिबाला, नारायणी आदि नारी चरित्र की मर्मस्पर्शी, हृदयविदारक यंत्रणा और विद्रोही स्वरुप ये सारे नारीवादी चिन्तत का ही एक रुप प्रतिफलित हुआ है।

उपसंहारः

उपर्युक्त विशलेषण के आधार पर हम यह कह सकते है कि मामोनि रइसम गोस्वामी एक सफल उपन्यास लेखिका रही है। आज वह हमारे बीच नहीं है लेकिन कृतियों के माध्यम से हमेशा हमारे बीच विद्यमान रहेगी। आज भी हमारा समाज पूर्ण रुप से विकसित नहीं हो पाया है। हमारे समाज के विषय मे यह कहाँ जा सकता है कि We are physically mature but not mentally mature. हम शारीरिक रुप से विकसित तो हो गये है लेकिन मानसिक विकास होना अभी भी बाकी हैं। मानसिक रुप से विकास हुये बिना समाज का विकास नहीं हो सकता। डॉ. राधाकृष्णन ने कहाँ था कि– we cannot make the people good by the act of parliament. हमें नारी के प्रति अपनी दृष्टिकोण को बदलना पड़ेगा। उसके प्रति एक अच्छे सोच अभाव में उसके प्रति न्याय नहीं किया जा सकता। मामोनि रइयम गोस्वामी के उपन्यासों में यह भी देखा गया है कि स्त्री ही स्त्री को अकसर लजित करने को सोचती है। पुरुष प्रधान समाज की विवाहित स्त्री भी किसी विधवा को लांछना लगाने में पीछे नहीं है। एक विवाहित स्त्री एक विधवा स्त्री को प्रायः हेय और अवहेलना की दृष्टि से देखती है। ऐसे विचारों के कारण ही समाज में पुरुषों को स्त्री का शोषण करने में साहस बढ़ता है। दाताल हाथीर उये खोवा हाउदा उपन्यास की गिरिबाला और मामरे धरा तरोवाल उपन्यास की नारायणी नारी पात्रों के द्वारा लेखिका ने समाज में नारियों के मध्य चेतना जागृत करने का प्रयास किया है। जब तक हमारे समाज की नारियाँ पूर्ण रुप से चेतना युक्त नहीं बन जाती, तबतक समाज में व्याप्त विसंगतियों को दूर नहीं किया जा सकता। नारी एक परिवार के लिए आजीवन त्याग और तपस्या करती है। उसकी त्याग और तपस्या को विफल नहीं जाने देना चाहिए। ****

(टिप्पणीः- प्रस्तुत आलेख में उद्धृत उदाहरणों को गोस्वामी जी द्वारा रचित मूल असमीया उपन्यास ग्रन्थों से लिया गया है। जिसका हिन्दी में लिप्यान्तरण करने के साथ उसके गये अनुदित रुप को भी दिया गया है।)

पादटीकाः

1 गोस्वामी, मामोनि रइसम, लेखक, आधा लेखा दस्तावेज, संस्करण- 2008, प्रकाशक- श्री अजय कुमार दत्त, स्टुडेन्ट स्टोर, कलेज होस्टेल रोड, गुवाहाटी- 01, असम, पृष्ठ सं-11.

2 सम्पादक, प्रिय सखी (मासिक असमीया पत्रिका) पृ. सं- 38.

3 मामोनि रइसम गोस्वामी, चेनावर सोत (उपन्यास), पृष्ठ सं- 8.

4 मामोनि रइसम गोस्वामी, हृदयर तपस्वनी (उपन्यास), पृष्ठ संख्या- 179.

5 मामोनि रइसम गोस्वामी नीलकंठी ब्रज (उपन्यास), भूमिका से।

6 हेमन्त कुमार भराली, लेखक, मामोनि रइसम गोस्वामी उपन्यास समग्र, दाताल हाथीर उये खोवा हाउदा, संस्करण- 2011, प्रकाशक – बनलता, गुवाहाटी - 1 ,पृष्ठ सं.- 363

7 हेमन्त कुमार भराली, लेखक, मामोनि रइसम गोस्वामी उपन्यास समग्र, दाताल हाथीर उये खोवा हाउदा, संस्करण- 2011, प्रकाशक – बनलता, गुवाहाटी - 1 ,पृष्ठ सं.- 363

8 वहीं पृष्ठ सं.- 365

9 यहाँ पर एक बात स्पष्ट करना चाहुगा कि इस उपन्यास में बकड़ा के मांस का उल्लेख होने का किया अभिप्राय है? पूरे असम प्रान्त में ब्राह्मण वर्ग के घरों में शादी-विवाह, तीज-त्यौहार आदि के भोजो के आयोजनों में प्रायः बकड़ा के मांस को परोसा जाता है।

10 हेमन्त कुमार भराली, लेखक, मामोनि रइसम गोस्वामी उपन्यास समग्र, दाताल हाथीर उये खोवा हाउदा, संस्करण- 2011, प्रकाशक – बनलता, गुवाहाटी - 1 ,पृष्ठ सं.- 363

11 मामोनि रइसम गोस्वामी, दाताल हाथीर उये खोवा हाउदा, (उपन्यास), पृष्ठ सं.- 105,

सन्दर्भ ग्रन्थः-

असमीया-

1 भराली, हेमन्त कुमार, सम्पादक, मामानि रइसम गोस्वामीर उपन्यास समग्र, प्रथम प्रकाश जुलाई, 2011, प्रकाशक- श्री अनन्त हजारिका, बनलता, पानबजार, गुवाहाटी- 01, असम।

2 नेउग, डॉ. बिभा दत्त, सम्पादक, मामनि रइसम गोस्वामी स्मरण सृजन मनन, प्रथम संस्करण- जनवरी, 2012, प्रकाशक- नव कलिता, किरण प्रकाशन, डि. के मार्केट कमप्लेस, धेमाजि चारिआलि, असम।

3 ठाकुर, डॉ. नगेन, सम्पादक, एश बछरर असमीया उपन्यास, प्रथम संस्करण- नवम्बर, 2000, प्रकाशक- ज्योति प्रकाशन, पानबजार, गुवाहाटी- 01, असम।

4 गोस्वामी, मामोनि रइसम, आधा लेखा दस्तावेज, संस्करण- 2008, प्रकाशक-श्री अजय कुमार दत्त, स्टुडेन्ट स्टोर, कलेज होस्टेल रोड, गुवाहाटी- 01, असम।

5 हुसेइन, निकुमणि, समपादक, मामनि रइसम आभा आरु प्रतिभा, प्रथम संस्करण –2008, प्रकाशक- राजेन्द्र मोहन शर्मा, चन्द्र प्रकाश, पानबजार गुवाहाटी- 01, असम।